



पाठक-पीठिका

आपके पत्र प्यारे-प्यारे : आपकी भावनाओं के हरकारे

प्रिय पाठकों,

'रेल दर्पण' पत्रिका के बारे में आपके पारखी विचारों को हम तक पहुँचाने वाली आपकी प्यारी-प्यारी चिट्ठियाँ हमारे प्रयासों के प्रतिफल का आईना भी हैं और इन्हीं से हमें आगे बढ़ते रहने की ताकत भी मिलती है। दिसम्बर, 2013 में प्रकाशित अंक की तारीफ और समालोचना करने वाली ढेर सारी चिट्ठियाँ हमें मिली हैं। इन्हीं में से कुछ चुनिंदा खतों तथा समाचार पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं का प्रकाशन हम इस 'पाठक-पीठिका' स्तम्भ के अंतर्गत कर रहे हैं। इस बार की खास बात यह है कि दैनिक भास्कर, नवभारत, प्रातःकाल,

हमारा महानगर, जागरूक टाइम्स, यशोभूमि, आज का आनंद, गुजरात वैभव, नवाकाळ और दिव्य भास्कर जैसे प्रतिष्ठित हिंदी, मराठी एवं गुजराती भाषाओं के समाचार पत्रों में प्रकाशित समीक्षाओं में 'रेल दर्पण' के इस अंक की खुलकर तारीफ की गयी है, वहीं कुछ वरिष्ठ अधिकारियों, सम्पादकों एवं पत्रकारों ने स्वयं पत्र प्रेषित कर 'रेल दर्पण' पत्रिका को काफी सराहा है। 'रेल दर्पण' का सम्पादकीय परिवार आप सभी के प्रति अपनी विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपकी भावनाओं के हरकारे आपके पत्रों का सिलसिला ऐसे ही जारी रहे, यही हमारी मंगल कामना है।

प्रधान सम्पादक

आपसे मिले पत्र

पाठकों की जानकारी बढ़ाती है 'रेल दर्पण'

महोदय,

मैं आपको प्रभातम ग्रुप की ओर से 'रेल दर्पण' पत्रिका के प्रेषण के लिए धन्यवाद देता हूँ एवं आपको और आपकी सम्पादकीय टीम को पत्रिका की उत्कृष्टता के लिए मिले विभिन्न पुरस्कारों के लिए बधाई देता हूँ। इस 'रेल दर्पण' पत्रिका में महत्वपूर्ण गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी गई है, जिससे पाठकों को अपनी जानकारी बढ़ाने में काफी मदद मिलेगी एवं रेल कर्मचारियों का उत्साह भी बढ़ेगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ। आपका लेख 'कपास के जरिये विकास' बहुत ही प्रेरणादायक है। मैं आपको पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आगे भी 'रेल दर्पण' के जरिये आप लोगों तक रेलवे की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को पहुँचाने का रचनात्मक प्रयास निरंतर जारी रखेंगे।

विकास सिंगला, डायरेक्टर, प्रभातम ग्रुप, मुंबई

रोचक एवं प्रेरणादायी 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' की एक प्रति प्राप्त हुई, तद् हेतु धन्यवाद। इस अंक में विशेष रूप से श्री विपिन जैन द्वारा लिखा गया लेख 'माँ की साँसें' एवं सुश्री आराधना रावत का लेख 'स्वामी विवेकानंद के जीवन के तीन प्रेरक प्रसंग' सर्वाधिक रोचक एवं प्रेरणादायी है। पत्रिका में विभिन्न कविताएँ बहुत अच्छी हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत लुभावना है। पत्रिका में छपे फोटोग्राफ आधुनिक रेलवे के दर्शन कराते हैं तथा रेलवे के विकास को दर्शाते हैं। साथ ही पश्चिम रेलवे की विभिन्न गतिविधियों का भी हमें ज्ञान होता है। उत्कृष्ट सम्पादन के लिए हार्दिक बधाई।

मोहना नायर, कल्याण अधिकारी, भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग

शासकीय पत्रिकाओं में अग्रणी है 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' शासकीय प्रतिष्ठानों द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिकाओं में अग्रणी है। मैं इसमें साहित्य, कला संस्कृति, रेल-इतिहास और लोकोपयोगी विषयों

विशेष प्रतिक्रिया

बेमिसाल गृह पत्रिका है 'रेल दर्पण'



पश्चिम रेलवे की लोकप्रिय गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' के दिसम्बर 2013 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का अवलोकन करने के पश्चात प्रसन्नता हुई कि इसमें प्रकाशित लेख, कहानियाँ,

कविताएँ तथा महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कार अपने आप में बेमिसाल हैं। पत्रिका के पिछले कवर पर सुप्रसिद्ध विशिष्ट रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन पत्रिका को साहित्यिक उड़ान भी प्रदान करता है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी यह पत्रिका अहम भूमिका निभाती है। इस पत्रिका की रोचकता, पठनीयता एवं साहित्यिक रुझान पाठकों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। पत्रिका में प्रकाशन के जरिये रेल परिवार के नये रचनाकारों को काफी प्रोत्साहन मिलता है। मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में 'रेल दर्पण' पश्चिम रेलवे की एक आदर्श पत्रिका ही न रहे, बल्कि भारतीय रेल पर भी अपना अग्रणी स्थान बनाने में कामयाब रहे तथा नित्य नये-नये आयामों को जोड़कर पाठकों को आकर्षित करती रहे।

पुनः शुभकामनाओं सहित,

स्व.दीपक गुप्ता, पूर्व अपर महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे

पर जानकारीपरक लेखों तथा रचनाओं का समावेश पाता हूँ। इसके पिछले अंक में मैंने एक रोचक फोटो-फीचर देखा और पढ़ा। वास्तव में यह आपके उत्कृष्ट सम्पादन एवं संयोजन का अच्छा नमूना है। 'कल्पना ने भरी जब उड़ान : सृजन को मिली एक नई पहचान' शीर्षक वाला यह फोटो-फीचर वरिष्ठ रेल अधिकारी श्री रवीन्द्र कुमार टंडन की दूरगामी और विलक्षण सोच से निर्मित कलाकृतियों पर आधारित है। वास्तव में मुख्य परिचालन प्रबंधक जैसे शीर्षस्थ पद पर आसीन व्यक्ति का ज्यादा समय प्रशासनिक कार्यों में खर्च होता है। लेकिन सृजनधर्मी श्री टंडन ने

लीक से हटकर काम किया है। भंगार में चले जाने वाले बेकार सामान को सहेज कर उन्होंने उससे ऐसे शिल्प बनवाये, जो पश्चिम रेलवे के अजमेर मंडल के अजमेर, आबू रोड और उदयपुर स्टेशनों के परिसरों में आकर्षण का केन्द्र बन गये हैं। श्री रवीन्द्र कुमार टंडन से मिलने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला, लेकिन जब वे पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी थे, तब कदाचित्त उनसे टेलीफोन पर कई बार वार्तालाप हुआ। तब मैं 'नई दुनिया' में सम्पादकीय विभाग में कार्यरत था। श्री टंडन की सहजता, सौजन्यता और सुस्पष्टवादिता ने मुझे तब भी प्रभावित किया था और अब उनके सुरुचिपूर्ण कलात्मक योगदान के बारे में पढ़कर और अधिक खुशी हुई।

रवीन्द्र शुक्ला, वरिष्ठ पत्रकार, इन्दौर

'Rail Darpan' is a treat for avid readers.

Dear Sir,

I got the most awaited new edition of Western Railway's In-house magazine 'Rail Darpan' a few days ago. The highly intellectual and informative content of the edition is looking interesting and certainly this magazine will be a treat for avid readers. I am confident that this new edition will achieve great success and set a benchmark for others.

Gulshan Patel, Managing Director, Sai Advertisers, Mumbai

'Rail Darpan' is the best In-house hindi magazine

Dear Sir,

I Just had a look at & read the latest issue of 'Rail Darpan' hindi magazine of Western Railway, given to me by PRO, WR, Indore. Since, I was Rajbhasha Adhikari of Steel Authority of India (SAIL) at Indore long back, I can say with confidence that 'Rail Darpan' is probably the best In-House Magazine. I have ever seen. My sincere thanks & also congrats to the Team for such fabulous creation & contribution towards promotion of Rajbhasha Hindi.

S.K. Vidyarthi, Director, EKI Energy Services Ltd., Indore.

यशोभूमि

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

प्रगति पथ पर अग्रसर 'रेल दर्पण'

'डर मुझे भी लगा फासला देखकर, लेकिन मैं बढ़ता गया रास्ता देखकर, खुद-ब-खुद मेरे नजदीक आती गई मेरी मंजिल, मेरा हौसला देखकर...'। उक्त पंक्तियाँ पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' के लिए बिल्कुल सटीक बैठती हैं। तमाम चुनौतियों को स्वीकार करते हुए 'रेल दर्पण' का सफर निरंतर जारी है। 'रेल दर्पण' के 24वें अंक को देखकर पता चलता है कि किस प्रकार पत्रिका उत्कृष्टता के शिखर पर विराजमान है। एबीसीआई की तरफ से व्यावसायिक संचार क्षेत्र में सृजनात्मक उत्कृष्टता के लिए दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करना तथा साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था 'शैलजा नायर फाउंडेशन' की तरफ से इन हाउस क्रिएटिव एक्सेलेंस पुरस्कार से नवाजा जाना 'रेल दर्पण' की सार्थकता को सिद्ध करता है। 'रेल दर्पण' के इस नवीन अंक के आवरण पृष्ठ पर नई ट्रेन का चित्र हमें बताता है कि पश्चिम रेलवे ने जहाँ अपनी विकास परम्परा को आगे बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है, वहीं सृजनात्मक पक्ष को भी एक नई उँचाई दी है। पत्रिका की सामयिक गतिविधियों में पश्चिम रेलवे की प्रगति को चित्रों के रूप में निरूपित करके जो लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है, वह काफी रोचक लगा। कथा-कुंज में संघर्ष, गलत नहीं था वह, अतीत राग, माँ की सांसों के अलावा व्यंग्य रचना 'ऊँट पहाड़ के नीचे आता ही कहाँ है..?' एक सशक्त रचना के रूप में हमें नया रास्ता दिखाती है। चर्चित कवि श्री आशकरण अटल की रचना 'नायक भेद' फिल्मों के नायकों पर करारा व्यंग्य प्रस्तुत करती है। वैचारिकी के अंतर्गत बलात्कार की समस्या व समाधान तथा नामहीन पीड़ा हमें सोचने के लिए मजबूर करती है। काव्यात्मक अभिव्यक्ति रेलकर्मियों की काव्य उपासना को दर्शाती है। मंडलों के अंचलों से, स्वास्थ्य चर्चा, विशेष फोटो फीचर, पाठक पीठिका, प्रेरक व्यक्तित्व, अभिनंदन के हकदार, सखियों का संसार, प्रदर्शनी की झलक - आइये, निहारें अपलक सहित सभी नियमित स्तम्भ अपने नये रूप व साज-सज्जा के साथ काफी रोचक व मनोरंजक लगे। कपास के ज़रिये विकास की कहानी, पश्चिम रेलवे को इतिहास के पन्नों से उठाकर वर्तमान में ला देती है, जो काबिलेतारीफ है। विशेष अतिथि रचनाकार में श्री नक्शा लायलपुरी तथा सन्नी देओल व रमेश देव का साक्षात्कार युवा वर्ग के लिए उत्साही साबित होगा। 'रेल दर्पण' का यह नवीन अंक आकर्षक, रोचक, ज्ञानवर्धक और पठनीय बनाने के लिए पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन, वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर और उनकी सम्पूर्ण सम्पादकीय टीम प्रशंसा की पात्र है। सम्पादकीय टीम बेहतर भविष्य की ओर बढ़े यही हमारी शुभकामना।

योगेन्द्र सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

गुजरात वैभव

अहमदाबाद में प्रकाशित समीक्षा

हिन्दी के उद्यान का महकता

गुलदस्ता है 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का दिसम्बर, 2013 का अंक नई साज-सज्जा एवं आकर्षक रूप-

रंग में प्रस्तुत हुआ है। प्रथम दृष्टया यह अंक मन को भा जाता है। सभी पृष्ठों पर सरसरी निगाह डालने के लिए विवश कर देता है। भारतीय रेल एवं हिन्दी- दोनों हमारे राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक हैं एवं इनका एक जगह मिलन निश्चय ही आह्लादपूर्ण है। हिन्दी में पत्रिकाओं की भरमार है, किंतु 'रेल दर्पण' का इनमें एक विशिष्ट स्थान है। सुरुचिपूर्ण विषयों का समावेश, पश्चिम रेलवे की गतिविधियों का लेखा-जोखा तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण शुद्ध हिन्दी में सामग्री का प्रकाशन एक विशिष्ट उपलब्धि है। 'रेल दर्पण' में स्तम्भों का नामकरण भी बहुत ही सुरुचिपूर्ण शब्दों में किया गया है। कथा-कुंज, व्यंग्य-वीथिका, वैचारिकी आदि स्तम्भ विचार प्रेरक एवं पठनीय हैं। काव्यात्मक अभिव्यक्ति में कविताओं की विषय वस्तु मौलिक, नूतन तथा दिशा दर्शक है। संघर्ष कहानी की विषय वस्तु तो दिल को छू जाती है। क्या माता-पिता एवं पुत्री एक-दूसरे के प्रति इतने असंवेदनशील हो सकते हैं? इसका उत्तर हमें कहानी में मिलता है, किंतु इसका सुखद समाधान नहीं खोजा गया। बीच का रास्ता निकालने के लिए हमारे शास्त्रों में आपद्धर्म का भी विधान है, जिस पर कोई ध्यान ही नहीं देता। एक जड़ बुद्धि से किसी विषय को पकड़े रहना विचारशीलता का लक्षण नहीं है। अस्तु, पत्रिका में विभिन्न स्थानों पर प्रसंगानुकूल रंगीन चित्रों का समावेश तथा सम्पूर्ण कलेवर में चिकने कागज का प्रयोग इसकी सुन्दरता एवं नयनरम्यता में चार-चांद लगा देता है। 'रेल दर्पण' के अंक उत्तरोत्तर पठनीय एवं संग्रहणीय सामग्री से अलंकृत होते जा रहे हैं। एतदर्थ सम्पादक मंडल निश्चय ही साधुवाद का पात्र है।

हमारा महानगर

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

जन-जन की पत्रिका है 'रेल दर्पण'

'रेल दर्पण' का यह अंक अपने हर अंक की तरह पश्चिम रेलवे की उत्तरोत्तर प्रगति, सुविधाओं, सेवाओं की बेहतरी और उत्कृष्टता के लिए उसके द्वारा किये जा रहे प्रयासों का आईना है। परम्परागत स्तम्भों के अलावा पत्रिका में 'पश्चिम रेलवे' की नई नियुक्तियों, आधुनिकीकरण के प्रयासों का वर्णन, विभिन्न प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों और अन्य चीजों की जानकारी उपलब्ध है, जो रोचक होने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में स्थापित और नये साहित्यकारों, रचनाकारों एवं कवियों को प्रकाशन का अवसर देने में यह पत्रिका बेजोड़ है। इस दिशा में इसका यह प्रयास हर दृष्टि से सराहनीय है। अतीत से वर्तमान तक की सतत यात्रा कराते हुए भविष्य के लिए पश्चिम रेलवे द्वारा किये जा रहे कार्यों के दिलचस्प विवरण के अलावा विशेष अतिथि रचनाकारों की चुनिंदा रचनाओं के साथ अंतिम पृष्ठ की मुलाकात इस पत्रिका की विशिष्ट पहचान बन गई है। श्री सनी देओल से साक्षात्कार तथा हिन्दी और मराठी के चर्चित अभिनेता श्री रमेश देव से गपशप जैसे पहलू इसके आकर्षण में हमेशा की तरह चार चांद का काम करते हैं। सखियों का संसार, अच्छे कार्यों की सराहना, नई-नई जानकारीयों से पाठकों को रू-ब-रू कराना अपने आप में अनूठा है। पत्रिका को वर्षानुवर्ष मिलने वाले तमाम पुरस्कार इस बात के साक्षी हैं। जैसे-जैसे समय बीत रहा है, वैसे-वैसे पश्चिम रेलवे की यह गृह पत्रिका जन-जन की पत्रिका बनती जा रही है। यह कारवां ऐसा ही सतत

चलता रहे, यही हमारी शुभकामना तथा प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन और उनकी टीम को हार्दिक साधुवाद।

नीरज तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार

प्रातःकाल

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

अतीत से वर्तमान की अनूठी दास्तान 'रेल दर्पण'

पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भारतीय रेलवे के अंतर्गत पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का दिसम्बर, 2013 का अंक कई स्तरों पर सेतु की भूमिका निभाते हुए इतिहास और वर्तमान की अनूठी दास्तान पेश करता है। साथ ही इसके आवरण पृष्ठ पर नये ईएमयू रेल का चित्र लगाकर निकट भविष्य में यात्रियों के लिए सुविधा का एक और आगाज भी कर दिया गया है। एक तरफ पत्रिका में 'महाप्रबंधक का विशेष लेख' के माध्यम से पश्चिम रेलवे की उपलब्धियों की बानगी पेश की गई है, तो दूसरी तरफ अन्य स्थायी स्तम्भों की विषयवस्तु और रोचक प्रस्तुति से किसी विभाग विशेष की गृह पत्रिका की सीमा से निकलकर यह पत्रिका उपयोगिता के स्तर पर जन सामान्य से सम्बंध स्थापित करती है। सभी स्थायी स्तम्भ अपने संदर्भित क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण दे जाते हैं।

'रेल दर्पण' विभागीय प्रतिभाओं से रू-ब-रू कराने के लिए एक बड़े मंच की भूमिका निभा रही है। पश्चिम रेलवे के अंतर्गत होने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के सचित्र विवरण पश्चिम रेलवे की सामाजिक प्रतिबद्धता से परिचित कराते हैं। हमेशा से ही आकर्षण का प्रमुख कारक 'विशेष फोटो फीचर' स्तम्भ में पश्चिम रेलवे के मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री रवीन्द्र कुमार टंडन की पहल पर ऐतिहासिक स्थल उदयपुर और अजमेर स्टेशन पर सजाई गई कलाकृतियाँ सृजनात्मक सोच की मिसाल पेश कर रही हैं। विशेष अतिथि रचनाकार में मशहूर गीतकार श्री नक्शा लायलपुरी जी की रचनाओं को पढ़ना पाठकों के लिए पत्रिका की तरफ से एक तोहफे सरीखा सुखद एहसास कराता है। पत्रिका में विभिन्न विषयों के सचित्र वर्णन का कुशल संयोजन पाठकों को सम्पादकीय टीम का प्रशंसक बनाता है।

अश्वनी राय, वरिष्ठ पत्रकार

दैनिक भास्कर

इंदौर में प्रकाशित समीक्षा

नई ऊंचाइयों का बयान रेल दर्पण

पश्चिम रेलवे की विशिष्ट हिन्दी पत्रिका 'रेल दर्पण' का नवीनतम अंक मिला। अपने पूर्व अंकों की परम्परा के अनुसार यह अंक भी रेलवे की सम्पूर्ण सूचनाओं के साथ मनोरंजन से भरपूर सामग्री से ओत-प्रोत है। मुंबई में पश्चिम रेल नेटवर्क के 150 वर्षों पर आयोजित प्रदर्शनी का सचित्र वर्णन पठनीय है। यह अंक अपने हर अंक की तरह पश्चिम रेलवे की उत्तरोत्तर प्रगति, सुविधाओं, सेवाओं की बेहतरी, सुरक्षा, कल्याण, विकास परियोजनाओं और रेलवे के इतिहास की शानदार सौगात है। राजभाषा हिन्दी के प्रसार-प्रचार में स्थापित और नये साहित्यकारों, रचनाकारों, कवियों को अवसर देने में यह पत्रिका बेजोड़ है। सखियों का संसार, अतीत राग, भला नागरिक, नायक भेद जैसी साहित्यिक रचनाएँ अपने आप में अनूठी हैं। पत्रिका को वर्षानुवर्ष मिलने

अखबारों में प्रकाशित समीक्षाएँ

वाले तमाम पुरस्कार इस बात के साक्षी हैं। काव्यात्मक रचनाओं को स्थान देकर इस पत्रिका को हिन्दी की विशिष्ट पत्रिकाओं में शामिल करने योग्य बनाया गया है।

नवभारत

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

नये स्वरूप के नव स्पंदन का प्रतिबिम्ब है 'रेल दर्पण'

'रेल दर्पण' के इस अंक को पश्चिम रेलवे के नये स्वरूप के नव स्पंदन का प्रतिबिम्ब कहा जा सकता है। इस पत्रिका के दिसम्बर, 2013 के अंक में एक ओर जहाँ टेक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट परोया गया है, वहीं प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन ने 'कपास के जरिये विकास' शीर्षक से प्रकाशित लेख के जरिये पश्चिम रेलवे के ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाने का सुंदर प्रयास किया है। सामयिक गतिविधियाँ, स्वास्थ्य चर्चा, कथा कुंज, व्यंग्य वीथिका, अभिनंदन के हकदार, सांस्कृतिक हलचल, सुडोकू, वैचारिकी, खेल-खिलाड़ी, जिंदादिली और उल्लास के हरकारे, पाठक-पीठिका, मंडलों के अंचलों से जैसे स्तम्भ जहाँ सामाजिक सरोकार की झलक प्रस्तुत कर रहे हैं, वहीं काव्यात्मक अभिव्यक्ति साहित्यिक अंदाज को बयां कर रही है। हेरिटेज सामग्री का सचित्र वर्णन 'रेल दर्पण' के विविध आयामों को दर्शा रहा है। मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री रवीन्द्र कुमार टंडन की कविता 'व्यथा एक विद्यार्थी की', मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री शैलेन्द्र कुमार की 'शक्ति' और उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (योजना) श्री संतोष कुमार झा की कविता 'हे नारी तुम चुप क्यों हो...' ने इस अंक को सारगर्भित बना दिया है। अंग्रेजी में वर्णित सिने स्टार श्री सनी देओल के विशेष साक्षात्कार को कार्यकारी सम्पादक श्री होरमज मोहता और उप सम्पादक श्री अजय सोलंकी ने ट्रेसपासिंग से जोड़कर बहुत ही अर्थपूर्ण परिवेश में ढाल दिया है। वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर ने श्री सरोज सुमन की जीवनी के माध्यम से स्वर लहरी को बड़े ही बेबाक अंदाज में परोया है। अंत में श्रीमती अर्चना महतपुरकर द्वारा वर्णित हरे चने के परातों की विधि ने पत्रिका का जायका बढ़ा दिया है।

कमल मिश्रा, प्रमुख संवाददाता

जागरूक टाइम्स

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

नित्य नवेली 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का नवीन अंक सिद्ध करता है कि 'रेल दर्पण' अंक दर अंक नित्य नवेली स्वरूप में प्रस्तुत हो रही है। सम्पादकीय टीम द्वारा इसे बहुआयामी बनाने के प्रयास पूर्णतः सफल जान पड़ते हैं, क्योंकि 'रेल दर्पण' में प्रस्तुत पठन सामग्री उत्तम दर्जे की होने के साथ ही ज्ञानवर्द्धक भी है। 'रेल दर्पण' रेल परिवार के सदस्यों की प्रतिभाओं की रचनात्मक सृजन क्षमताओं को खुलकर निखरने का अवसर प्रदान करती है। प्रधान सम्पादक एवं मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चंद्रायन ने 'कपास के जरिये विकास की अनोखी मिसाल' शीर्षक से प्रकाशित विशेष लेख के माध्यम से मुंबई (उस दौर की बंबई) के देश की आर्थिक राजधानी बनने की कहानी बखूबी बयां की है। श्री संतोष कुमार झा की कविता 'हे नारी, तु चुप क्यों

है?' में नारी पर हो रहे अनवरत अत्याचार और कन्या भूषण हत्या पर वेदना प्रकट की गई है। वहीं 'व्यथा एक विद्यार्थी की' कविता के माध्यम से श्री रवीन्द्र कुमार टंडन ने एक गरीब माँ के विद्यार्थी बेटे की मनो व्यथा का बहुत ही मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया है। श्री डी.जी. मिश्रा द्वारा लिखित नाटिका '100 रुपये का नोट' में नौकर पर चोरी के बेवजह शक में मालिक का पश्चाताप मालिक में इंसानियत होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो हमारे समाज को आशा की रोशनी दिखाता है। श्रीमती इंदु सिन्हा द्वारा लिखित कहानी 'संघर्ष' जात-पाँत में फँसी परम्पराओं को दर्शाया गया है। श्री विपिन जैन की लघु कथा 'माँ की साँसें' में रिश्तों की उहापोह साफ-साफ देखने को मिलती है। प्रेरक व्यक्तित्व में स्वामी विवेकानंद की प्रेरक कथाओं और लोकनायक जयप्रकाश नारायण के व्यक्तित्व को बड़े ही बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'सखियों का संसार' में श्रीमती कांचन प्रकाश जोशी, श्रीमती अलका विजय कोरे और श्रीमती अर्चना महतपुरकर द्वारा पेश जायकेदार पकवानों की रेसिपी से साबित होता है कि महिलाएँ चाहे कामकाजी हों या घरेलू, रसोई आज भी घर में उनका प्रिय स्थान है। स्थायी स्तम्भ स्पेशल इंटरव्यू में गणेश विद श्री रमेश देव का साक्षात्कार बड़ा ही रोचक बन पड़ा है। श्री रमेश देव की जिंदगी के सबसे दो अहम पड़ाव (स्ट्रगल के दौरान यात्रा और पत्नी सीमा के साथ पहली मुलाकात और रेल में हनीमून) की साक्षी रेलवे रही, ये अपने आप में बहुत ही रोमांचक और यादगार घटनाएँ हैं। विशेष अतिथि रचनाकार में श्री नक्श लायलपुरी जी की गज़लें और गीत बहुत ही यथार्थवादी और दिल को छूते हैं। इन सबके अतिरिक्त विशेष फोटो फीचर में पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी श्री गजानन महतपुरकर द्वारा प्रस्तुत राजस्थान के उदयपुर और अजमेर रेलवे स्टेशनों की कलात्मकता किसी भी यात्री को बार-बार उन स्टेशनों पर जाने को लालायित करती है। 'रेल दर्पण' में प्रकाशित रेलकर्मियों की उपलब्धियाँ जैसे कि मुंबई मैराथन के विजेता रेलकर्मियों के अभिनंदन समारोह, स्पोर्ट्स स्पर्धा, बहुमुखी प्रतिभा के धनी मोटरमैन श्री मुनेश की जिंदादिली, रेल कवियों की 100 चुनिंदा रचनाओं के संकलन 'कविता शतक' की जानकारी आदि रेल कर्मियों को प्रोत्साहित करती है और अंक दर अंक नई प्रतिभाओं को 'रेल दर्पण' से जुड़ने को प्रेरित करती है। इन सभी के अतिरिक्त भी 'रेल दर्पण' में प्रस्तुत अन्य बेहतरीन पाठ्य सामग्री पाठक की रुचि पर खरी उतरती है। उम्मीद है कि 'रेल दर्पण' के आगामी अंक में सामग्रियों की रोचकता और साज-सज्जा में और निखार आयेगा और पाठक दीवानगी से इसका इंतज़ार करेंगे।

रेणु शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

आज का आनंद

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

निखरती जा रही है 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग द्वारा पिछले वर्षों से प्रकाशित की जा रही अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'रेल दर्पण' अपने नित नये कलेवर से दिनों-दिन निखरती जा रही है। पत्रिका के सम्पादक मंडल ने इसे सिर्फ रेलवे तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि उसके बाहर जाकर भी पत्रिका को बहुआयामी बनाने का प्रयास किया है। इस पत्रिका में रेलवे

की गतिविधियों का लेखा-जोखा तो है ही मगर इसके साथ ही रेल परिवार की रचनात्मक प्रतिभाओं की सृजन क्षमता को निखारने के लिए भी अवसर प्रदान किया गया है। इस पत्रिका में अब तक सर्वश्री गुलज़ार, जावेद अख्तर, कैफी आज़मी, शैल चतुर्वेदी, निंदा फाज़ली, हुल्लड़ मुरादाबादी, गोपालदास नीरज, अशोक चक्रधर और श्रीमती माया गोविंद जैसे दिग्गज साहित्यकारों की खास रचनाओं का प्रकाशन किया जा चुका है। साथ ही रेल परिवार की श्रीमती इंदु सिन्हा की कहानी 'संघर्ष', श्री विपिन जैन की लघुकथा 'माँ की साँसें' तथा श्री रघुराज सिंह कर्मयोगी की व्यंग्य रचना 'ऊँट पहाड़ के नीचे आता ही कहाँ है...' काफी सुकून देती है। इन रचनाओं से पता चलता है कि रेल परिवार में कितनी प्रतिभाएँ भरी पड़ी हैं, जिन्हें आगे लाने का काम 'रेल दर्पण' पिछले 14 सालों से कर रही है। इसके अलावा इस बार के 'रेल दर्पण' के अंक में पश्चिम रेलवे के मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री रवींद्र कुमार टंडन की कल्पना की उड़ान के फोटो फीचर ने उनकी कल्पना शक्ति के आगे नतमस्तक होने को मजबूर कर दिया।

सुरेश परिहार, सीनियर रिपोर्टर

नवाकाळ

मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

'रेल दर्पण' चा आकर्षक अंक

'रेल दर्पण' चा अर्द्ध वार्षिक अंक नुकताच प्रसिद्ध झाला आहे. पश्चिम रेल्वेचे जनरल मॅनेजर श्री हेमन्त कुमार यांचे पहिल्याच पानाचवर छायाचित्र व माहिती आहे. नंतर मुख्य जनसंपर्क अधिकारी व सम्पादक श्री शरत चंद्रायन यांनी एका लेखात सदर गृहपत्रिकेची वैशिष्ट्ये सांगितली आहेत. हा अंक विविधतेने आकर्षक झाला आहे. सुश्री आराधना रावत यांनी स्वामी विवेकानंद यांचा आणि श्रवण कुमार भार्गव यांनी जयप्रकाश नारायण यांचा थोडक्यात फारच उत्तम परिचय करून दिला आहे. नेहमीप्रमाणे या अंकात इंग्रजी विभाग आहेच. त्यात रमेश देव यांची सुंदर मुलाखत आहे. एकंदर अंकाची प्रशंसा करावी तितकी कमीच आहे. पण एक गोष्ट फारच खटकली. मुंबई-महाराष्ट्रातील चार कोटींहून अधिक प्रजेची मातृभाषा मराठी आहे. या भाषेत कमीत कमी एक तरी लेख किंवा कथा किंवा कविता हवी ना? आशा आहे की, सम्पादक या बाबतीत लक्ष देतील.

दिव्य भास्कर

अहमदाबाद में प्रकाशित समीक्षा

नवी ऑयार्ओनुं लक्ष्य रेल दर्पण

पश्चिम रेल्वेची विशिष्ट हिंदी पत्रिका रेल दर्पणाने नवीनतम अंक तेना अगाडिना अंकोनी परंपरा मुजब रेल सुचनाओनी साथे-साथे मनोरंजन पुरो पाडतो अने अन्य सामग्रीओथी ओतप्रोत तैयार थर् थूक्यो छे. जे मुंबई पश्चिम रेल नेटवर्कना १५०मां वर्ष पर आ अंक प्रदर्शित करवामां आवशे. आ अंक दरेक अंकोनी सरणामाओथे पश्चिम रेलवेनी उत्तरोत्तर प्रगति सुविधाओथी भरपूर, विकास परिद्योजनाओ तेमज रेलवेना धतिहासनी माहितीओथी भरपूर जनेलो छे. आ पत्रिकांमां वर्षो वर्ष जनेला तमाम पुरस्कारोनी वातो पण आ वातनी साक्षी पुरावे. कविताओ सामेल करीने आ हिंदी पत्रिकाने उत्तम जनावामा आव्यो छे.